पाठ्यक्रम विवरण

1.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	जैविक कृषि
2.	पाठ्यक्रम की भाषा	हिन्दी
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	प्रमाण पत्र (सर्टिफिटेक)
4.	पाठ्यक्रम की पद्धति	सर्टिफिकेट
5.	पाठ्यक्रम की अवधि	3 माह (90 दिन)
6.	पात्रता	मान्यता प्राप्त बोर्ड से दसवीं पास
7.	पाठ्यक्रम शुल्क	रु. 1500 / व्यक्ति

सामान्य जानकारी

- इस प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 10वीं पास होना अनिवार्य है।
- इस पाठ्यक्रम का ऑनलाइन शुल्क रु 1500 (पंद्रह सौ रुपये) है।
- यह पाठ्यक्रम 90 दिन तक संचालित होगा तथा इसका प्रमाण पत्र उपलब्ध होगा।
- यह प्रमाण पत्र बैंको व अन्य वित्तीय संस्थाओं से ऋण लेकर स्व रोजगार शुरु करने में काम आ सकता है।
- पाठ्यक्रम में पंजीकरण करने के बाद शुल्क का भुगतान ऑनलाइन या NEFT/RTGS के माध्यम से बैंक में कर सकते हैं।

बैंक का नाम – आई.सी.आई.सी.आई., बीछवाल, बीकानेर

खाता संख्या – 670101700150, IFSC Code -ICIC 0006701

- कोई भी पंजीयन व्यक्ति व्यक्तिशः निदेशालय में आकर भी पाठ्यक्रम से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकता है या इस हेल्प लाइन 0151.2250638 पर कार्यालय समय में सम्पर्क कर सकता है।
- पाठ्यक्रम में पंजीकरण हेतु मान्यता प्राप्त बोर्ड का दसवीं उत्तीर्ण प्रमाण पत्र व एक नवीनतम फोटो अपलोड करनी होगी।
- पाठ्यक्रम की परीक्षा हेतु ऑनलाईन प्रश्न उपलब्ध करवाये जायेंगे जिनका उत्तर आप ऑनलाईन दे सकते हैं।
- दूरस्थ माध्यम से कृषि शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा व तकनीकी ज्ञान को उन लोगों तक पहुँचाना है जो उच्च संस्थाओं में प्रवेश लेकर पढाई करने में असमर्थ होते हैं तथा कृषि के ज्ञान को उपयोग करना चाहते हैं।

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन

प्रो. आर. पी. सिंह
कुलपति, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

पाठ्यक्रम संकलन व सम्पादन एवं लेखन

डॉ. एस. एम. कुमावत
आचार्य (शस्य विज्ञान)

डॉ. ए. आर. नकवी
आचार्य (कीट विज्ञान)

डॉ. राजेन्द्र कुमार जाखड़
सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान)

डॉ. अशोक कुमार मीणा
सहा. आचार्य (पौध व्याधि)

सुश्री तनुजा पूनिया
विद्या वाचस्पति, छात्रा

प्रकाशक

डॉ. एस. एल. गोदारा
निदेशक

डॉ. आर. के वर्मा
सहा. निदेशक

मानव संसाधन विकास निदेशालय

जैविक खेती ही है हल, आज नहीं तो कल

जैविक खेती अपनाईये, पर्यावरण को बचाईये

जैविक कृषि

त्रैमासिक प्रमाण - पत्र पाठ्यक्रम
(दूरस्थ शिक्षा माध्यम)

पाठ्यक्रम विवरण एवं निर्देशिका

उत्तमा तृप्तिस्तु कृषिकर्मे

SKRAU DHRD
कृषि शिक्षा आपके द्वार

मानव संसाधन विकास निदेशालय
स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर - 334006

प्रो. आर.पी. सिंह
कुलपति

स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
बीकानेर-334006, राज.
Phone: +91-151-2250443, 2250488 (O)
email : vcrau@raubikaner.org

संदेश

फसल उत्पादकता में गिरावट, अधिक लागत, भूमि व जल प्रदूषण के साथ मृदा एवं मानव स्वास्थ्य पर पड़ते प्रतिकूल प्रभाव ने हमें एक बार फिर जैविक कृषि की ओर लौटने को मजबूर किया है।

जैविक खेती, भारत की परम्परागत कृषि प्रणाली रही है। अधिक उपज और मुनाफा कमाने की होड़ में हमारे किसान भाईयों ने कृषि रसायनों का अंधाधुंध उपयोग प्रारम्भ कर दिया, इसके दुष्प्रभाव हमारे सामने हैं।

कृषि रसायनों के अत्यधिक उपयोग के कारण हमने अनेक असाध्य बीमारियों को न्यौता दे दिया है। आने वाली पीढ़ियों के लिए हालात और अधिक दुष्कर हो जाएंगे, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

इन परिस्थितियों के मद्देनजर हमें जैविक कृषि के प्रति पूर्ण सतर्क होना जरूरी है। इस दिशा में पहल करते हुए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा 'जैविक कृषि' पर दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इसके लिए मैं, विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास निदेशालय के निदेशक डॉ. एस. एल. गोदारा एवं उनकी पूरी टीम को शुभकामनाएं देता हूं।

मुझे विश्वास है कि 'जैविक कृषि–दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम' युवाओं एवं प्रगतिशील किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

आर. पी. सिंह

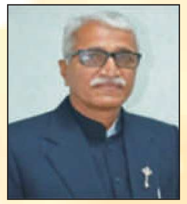

डॉ. एस.एल. गोदारा
निदेशक

स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
बीकानेर-334006, राज.
Phone : 0151-2250638
email : dhrd@raubikaner.org

निदेशक की कलम से..

जैविक कृषि' में जीवांश एवं प्रकृति प्रदत्त संसाधनों एवं कार्बनिक अवशिष्ट का यथा स्थान उपयोग किया जाता है ताकि उत्पादन व्यय कम होकर अधिकाधिक लाभ प्राप्त हो सके एवं कृषक स्वावलम्बी बन सके। भारत की भौगोलिक परिस्थितियां, जलवायु, भूमि एवं संसाधनों के मद्देनजर जैव विविधता, फसल विविधिकरण एवं जैविक कृषि की विपुल संभावानाएं हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि जैविक कृषि का सरलीकरण करके, वैश्विक बाजार मांग एवं मानकों के अनुरुप ही उत्पाद तैयार किया जावें। इस प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम में जैविक कृषि को चार इकाईयों में बांटा गया है, प्रथम– जैविक कृषि–परिचय व प्रमाण पत्र की प्रक्रिया, द्वितीय– जैविक कृषि में प्रयुक्त जैविक संसाधन, तृतीय– जैविक कृषि की कार्य प्रणाली व उद्यमिता/विपणन प्रबंधन एवं चतुर्थ इकाई में जैविक कृषि के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी से संबंधित सम्पूर्ण विवरण दिया गया है।

डॉ. आर. के. वर्मा, आचार्य (कृषि प्रसार एवं संचार), सहायक निदेशक, मानव संसाधन विकास निदेशालय, बीकानेर के अथक प्रयास से इस पाठ्यक्रम को इस स्वरुप में लाया जा सका है। जैविक कृषि दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम सामग्री के लेखन, संकलन व सम्पादन के लिए डॉ0. सागर मल कुमावत, आचार्य (शस्य विज्ञान), डॉ0 ए. आर. नकवी, आचार्य (कीट विज्ञान), डॉ0 अशोक कुमार मीणा, सहायक आचार्य (पौध व्याधि विज्ञान), डॉ0 राजेन्द्र कुमार जाखड, सहायक आचार्य (मृदा विज्ञान) को हृदय से धन्यवाद देता हूं। इस पाठ्यक्रम सामग्री की टंकण व स्वरूपण मे श्री शिव कुमार जोशी व सुश्री तनुजा पूनिया का सहयोग प्रशंसनीय रहा इस हेतु उन्हें मैं धन्यवाद देता हूं। प्रस्तुत चार ईकाइयों में संकलित जैविक कृषि साहित्य को पढ़कर युवा वर्ग, प्रगतिशील किसान एवं कृषि उद्यमी, स्व–रोजगार एवं स्वालम्बन की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

एस.एल.गोदारा

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर प्रशिक्षित मानव संसाधन व नई प्रौद्योंगिकियों के निर्माण में अग्रणी है तथा नवीनतम प्रौद्योगिकियों को कृषक वर्ग व कृषि सम्बन्धित अन्य हितधारकों तक त्वरित गति से स्थानान्नतरण में शामिल है। विश्वविद्यालय स्टाफ को नवीनतम तकनीकी व नवाचार से ओतप्रोत रखने व उनके ज्ञान, कौशल व दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से सन् 1996 में मानव संसाधन विकास निदेशालय की स्थापना की गई। यह निदेशालय नव नियुक्त शिक्षकों के लिए ऑरियन्टेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यरत शिक्षकों के ज्ञान में सुधार लाने, कृषि विभाग के अधिकारियों, सार्वजनिक व अन्य शैक्षणिक संस्थानों के व्यक्तियों के लिए समय–समय पर विभिन्न तरह के शैक्षिक कार्यक्रम तथा कृषि से जुडे सभी वर्गों के लिए दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करता है।

1970 के दशक में नये बीज, उन्नत तकनीकों, उर्वरक, पानी एवं रसायनों के उपयोग से खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई। लेकिन 1980 के दशक के उत्तरोत्तर फसल उत्पादकता में गिरावट, अधिक लागत, जल व भूमि प्रदूषण, मृदा तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव के कारण एक नई कृषि पद्धति के बारे में सोचा जाने लगा। नई कृषि पद्धति का मुख्य ध्येय है टिकाऊपन, अर्थात् किस प्रकार फसल उत्पादकता के स्तर को बनाया रखा जा सकता है। इस प्रश्न के समाधान के रूप में टिकाऊ कृषि की अवधारणा का जन्म हुआ। टिकाऊ कृषि के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आज विभिन्न कृषि पद्धतियाँ प्रचलित हैं जिनमें से एक हैं जैविक कृषि। जैविक कृषि के क्रमिक विकास की कई कड़ियाँ है और वर्तमान में जैविक कृषि ने एक आन्दोलन का रूप ले लिया है। जैविक कृषि एक सम्पूर्ण कृषि कार्य माला है, जिसमें पर्यावरण को शुद्ध रखते हुए प्राकृतिक संतुलन को कायम रखकर भूमि, जल व वायु को प्रदूषित किये बिना दीर्घकालीन व टिकाऊ उत्पादन प्राप्त किया जाता है। इस पद्धति में जीवांश एवं प्रकृति प्रदत्त संसाधनों एवं कार्बनिक अवशिष्ट का यथा स्थान उपयोग किया जाता है, ताकि उत्पादन व्यय कम होकर अधिकाधिक लाभ प्राप्त हो सके एवं कृषक स्वावलम्बी बन सके।

दूरस्थ माध्यम से कृषि शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा व तकनीकी ज्ञान को उन लोगों तक पहुँचाना है जो उच्च संस्थाओं में प्रवेश लेकर पढाई करने में असमर्थ होते हैं तथा कृषि के ज्ञान को उपयोग करना चाहते हैं।

जैविक कृषि पाठ्यक्रम को चार इकाईयों में विभक्त किया गया है :

इकाई–1	परिचय व जैविक प्रमाणीकरण प्रकिया
इकाई–2	जैविक कृषि में संसाधन प्रबन्धन
इकाई–3	जैविक कृषि कार्य योजना उद्यमिता / विपणन प्रबन्धन
इकाई–4	जैविक कृषि की कार्य प्रौद्योगिकी